

सेसेक्स	74,248.22	▲ +20.59
डॉलर	83.319	▼ -0.156
तापमान (डिग्री सेल्सियस)		
आज का अनुमान		
अधिकतम न्यूयार्क (फूटम)		
रांची	31.0	22.0
धनबाद	33.0	26.0
जमशेदपुर	39.0	24.0
पलामू	33.0	23.0
	35.0	

डालटनांज (मेदिनीनगर), चैत्र कृष्ण पक्ष 13, विक्रम संवत् 2080

डालटनांज (मेदिनीनगर), रविवार, 07 अप्रैल 2024, वर्ष-30, अंक- 169, पृष्ठ-12, मूल्य ₹3.00, रजिस्ट्रेशन नं.: आरएनआई. 61316/94

www.rastrriyanaveenmail.com

संपादकीय लोकतंत्र का उजास अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रही भाजपा ... 8

डालटनांज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित

भारत कुछ लोगों की संपत्ति नहीं, इस पर ... 12

देश/विदेश



सत्यनेत जयते

राष्ट्रीय नवीन मेल

ईश्वर में हमारा विश्वास



रमजान
मुबारक



सहरी
04:10
इफ्तार
06:10

कानूनी विवाह

कानूनी व

एक नजर

पिकअप वाहन की चपेट में आने से घायल

गढ़वा। गढ़वा सदर थाना क्षेत्र के करमडीह गांव निवासी राम जी मेहता की पसी चपेट में अपने से घायल हो गई। उसे इलाज के लिए गढ़वा सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि वह घर के बाल में ही मवेही लेकर कार रही थी। उसे इलाज एक पिकअप वाहन ने उसे धक्का मार दिया। जिससे वह घायल हो गई। स्थानीय लोगों की मदद से उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहाँ उसका इलाज चल रहा है। घटना में घायल के शरीर के विनियन हिस्सों में अंधीरे छोटे आई है।

महिला ने कीटनाशक खाकर किया

आत्महत्या का प्रयास

गढ़वा। बरडीहा थाना क्षेत्र के सुखनदी गांव निवासी अखिलेश रजवार की पत्नी सोनीता देवी 26 वर्ष कीटनाशक दवा खाकर आत्महत्या करने के प्रयास की। उसका इलाज सदर अस्पताल में किया जा रहा है। घटना के संबंध में बताया गया कि घर में किसी बात को लेकर पति-पत्नी के बीच विवाद उत्पन्न हुआ था। इस बात से उग्र तिर्फ़ाने के परिजनों के द्वारा उसका इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहाँ उसका इलाज चल रहा है। इसके बाद विविक्तक के अनुसार उसकी रिस्ट्रिक्ट खारे से बाहर बताया गया है।

फांसी लगाकर की आत्महत्या

गढ़वा। बरडीहा थाना क्षेत्र के सलगा गांव निवासी लल्लू रजवार 30 वर्ष अपने ही घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को अपने कबूजे में कर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दी है।

१२

और ये भारत की दो टूक

आखिर भारत सरकार ने वही किया जो उससे अपेक्षित था। सरकार ने भारत के आंतरिक मामलों में दूसरे देशों द्वारा की जा रही टिप्पणियों को सरकार ने न केवल खारिज किया है, बल्कि तीखा जवाब देने की चेतावनी भी पिछले दिनों दी है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अवांछित टिप्पणी करने



वाले देशों को सलाह दी है कि अन्य देशों को भारत के मामलों में राजनीतिक टीका-टिप्पणी करने से बचना चाहिए। उल्लेखनीय है कि कुछ दिन पहले अमेरिका और जर्मनी ने प्रवर्तन निदेशालय द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर बयान जारी किया था। इसके बाद भारतीय विदेश मंत्रालय ने इन देशों के दूतावासों के उच्च अधिकारियों को तलब कर कड़ी आपत्ति जतायी थी। इसके बावजूद अमेरिका ने फिर से अपने बयान को दोहराते हुए उसमें आयकर विभाग द्वारा कांग्रेस के बैंक खातों पर रोक के मुद्दे को भी जोड़ दिया था। आप और कांग्रेस से जुड़े मामलों से भारत का हर नागरिक अवगत है ही। विदेश मंत्री जयशंकर ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि ऐसी बयानबाजी होती रही, तो उन देशों को बहुत कड़े जवाब के लिए तैयार रहना चाहिए। यह जगाजाहिर तथ्य है कि अनेक देश वैश्विक स्तर पर अपने वर्चस्व और प्रभाव को बढ़ाने के लिए दूसरे देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का प्रयास करते हैं। अमेरिका और कुछ यूरोपीय देश ऐसा करने में सबसे आगे रहते हैं। ये देश अपने को विशिष्ट समझते हैं और उन्हें लगता है कि वे दुनिया के दरोगा हैं। लोकतंत्र, मानवाधिकार, धार्मिक एवं नागरिक अधिकार, नैतिकता आदि की आड़ में ये देश दबाव बनाने का प्रयास करते हैं। जयशंकर ने उचित ही रेखांकित किया है कि ये उनकी पुरानी आदतें हैं और खराब आदतें हैं। वैसे भी अतरराष्ट्रीय व्यवस्था में एक-दूसरे देश की संप्रभुता के सम्मान का सिद्धांत आधारभूत सिद्धांत है। स्थापित आचरणों, पंरपाराओं और व्यवहारों का अनुपालन अगर कोई देश नहीं करता है, तो फिर उसे भी तैयार रहना चाहिए कि दूसरे देश उसकी राजनीति और कानून-व्यवस्था पर अपने विचार रखेंगे। हाल में चीन ने अरुणाचल प्रदेश की विकास परियोजनाओं तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा को लेकर आपत्ति की थी। उसने प्रदेश के अनेक स्थानों का नामकरण भी किया है। जयशंकर ने फिर रेखांकित किया है कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अधिन्न अंग है और हमेसा रहेगा। इससे पहले चीन कश्मीर और लद्दाख पर भी निराधार बयान दे चुका है। भारत में सर्वेधानिक और कानूनी व्यवस्था के अंतर्गत क्या हो रहा है और क्या होना चाहिए? क्या सही है और क्या गलत, इस बारे में विचार करने, समर्थन करने, आलोचना करने या विरोध जताने का अधिकार भारत के लोगों को ही है। अमेरिका हो, जर्मनी हो या चीन हो, उन्हें अपने देशों की चिंता करनी चाहिए। आपत्तिजनक टिप्पणियों से परस्पर विश्वास को चोट पहुंच सकती है और संबंध प्रभावित हो सकते हैं।

(भापाल)

हिन्दू नव वर्ष उत्सव के पीछे का विज्ञान

राष्ट्रीय चेतना के ऋषि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, “‘हमें गौरव से जीने की भावना जागृत करना है, यदि हम अपने हृदय में देशभक्ति बोज बोना चाहते हैं तो हमें हिन्दू राष्ट्र पंचांग की तिथियों का आश्रय लेना हो। जो कोई भी विदेशियों की तिथियों निर्भर रहता है वह गुलाम बन जाता है।’”

परक जगन्नाथ और आत्म-सम्मान खा देता है।” इस जायसवाल दिन पर प्रख्यात गणितज्ञ भास्कराचार्य सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, माह और वर्ष की गणना करने प्रथम भारतीय पंचांग की स्थापना की थी। जहां अन्य देशों में नववर्ष मनाने का आधार किसी व्यक्ति, घटना या स्थल से जुड़ा होता है और विदेशी लोग अपने देश की सामाजिक और धार्मिक परंपराओं और मान्यताओं के अनुसार इसे मनाते हैं, वहां हमारा भारतीय नववर्ष ब्रह्मांड के शाश्वत तत्वों जुड़ा हुआ है। ग्रहों और तारों की चाल पर आधारित हमारा नववर्ष सबसे विशिष्ट और वैज्ञानिक है। भारतीय संस्कृति सनातन संस्कृति एक सुंदर, तार्किक, ऐतिहासिक आधारितिक और वैज्ञानिक सम्भवता है। महात्मा गांधी अनुसार, किसी राष्ट्र की संस्कृति उसके लोगों के दिलों और आत्माओं में होती है। यह पूरी तरह से सटीक है क्योंकि ऐसे कई चीजें या प्रथाएं हैं जिनका हम सदियों से पालन कर आ रहे हैं। जैसा कि हम हिंदू नववर्ष मनाते हैं, आइए हमें कैलेंडर के पीछे के विज्ञान को देखें। भारत में खगोल विज्ञान की एक लंबी परंपरा है, हालांकि नियमित ऐतिहासिक दस्तावेजों की कमी के कारण इसके विकास का पता लगाना मुश्किल है। प्राचीन लेखन में पाये जाने वाले खगोलीय संदर्भों की व्याख्या की जानी चाहिए। भारतीय खगोल विज्ञान 14 ईसा पूर्व से पहले फला-फला, जो बैंकोलोनियन खगोल विज्ञान (जो पांचवीं शताब्दी में समृद्ध हुआ) से कहीं पुराना है। तिथियां (तारीखें) और नक्षत्र (तारे, तारा समूह शुद्धग्रह) प्रारंभिक वैदिक खगोल विज्ञान में अवधारणाएं थीं। पांचवीं शताब्दी में आर्यभट्ट सहित कई खगोलविदों ने वर्तमान

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्र
पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखण्ड द्वारा
कार्यालय : रांची रोड, रेडिमा, मेदिनीनगर, (डाल
गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लोह
अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जि

लोकतंत्र का उजास अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रही भाजपा

हमारी भारतीय जनता पार्टी का इतिहास भारतीय जनसंघ से जुड़ा है। जनसंघ की नींव श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने रखी थी। स्वतंत्रता के बाद पंडित जवाहर लाल नेहरू की अगुवाई वाली कांग्रेस सरकार में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी समिलित रहे थे किंतु नेहरू-लियोकत समझौते का विरोध एवं पंडित नेहरू की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के विरोध में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने 19 अप्रैल 1950 को केंद्रीय उद्योग मंत्री के पद से त्यागपत्र देकर कांग्रेस के विकल्प के रूप में एक नया राजनीतिक दल खड़ा करने का निर्णय किया। 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली में जनसंघ की स्थापना हुई थी, जिसके संस्थापक के रूप में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, प्रोफेसर बलराज मधोक जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी प्रमुख थे और जनसंघ का चुनाव चिन्ह दोपक तथा झंडा भगवा रंग का रखा गया। देश में सामान नागरिक सहित, गौहत्या पर प्रतिबंध एवं जम्मू कश्मीर से धारा 370 को समाप्त करना जनसंघ की राजनीति के प्रमुख विषय थे। वर्ष 1975 तक जनसंघ इन्ही मुद्दों को लेकर अपनी राजनीति कर रहा था किंतु इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल की घोषणा एवं आपातकाल के विरोध में स्वृक्त मोर्चा खड़ा करने के उद्देश्य से तत्कालीन जनसंघ के नेतृत्वकर्ताओं ने 1977 में जनसंघ का विलय जनता पार्टी में किया, किंतु अपने वैचारिक अधिष्ठान

से लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक भाजपा ने देश की दलगत राजनीति में ऐसे प्रेरणा के पुँज दिए हैं, जिनकी आभा से राजनीतिक जगत जगमगा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के रूप में हमारे नेतृत्व की संकल्प शक्ति की वजह से ही लगभग पांच सौ वर्षों की प्रतीक्षा के पश्चात आज अव्याधा में भव्य और दिव्य राम मंदिर के निर्माण का सपना वास्तविकता बना है। हमारे संस्थापकों ने एवं भाजपा के असंख्य कार्यकर्ताओं ने श्रीरामलला को अपने मंदिर में विराजमान देखने हेतु अपनी चुनी हुयी सरकारें भी न्योछावर कर दीं, यह अपने विचारधारा पर अडिग रहने का एक उदाहरण मात्र है। हमारे पितृपुरुषों का संकल्प एवं एक देश में दूसरे विधान दो प्रधान दो निशान नहीं चलेंगे की पूर्ति स्वरूप प्रधानमंत्री मोदी की सरकार द्वारा लिया गया अनुच्छेद 370 को हटाने का ऐतिहासिक निर्णय हमारी ध्येय पूर्ति की यात्रा का और एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार एवं हमारे पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं देश के वर्तमान गृह मंत्री अमित शाह जी के कार्यकाल में भाजपा ने श्रद्धेय अटलजी की सरकार तथा तत्कालीन संगठन की नीतियों को दिशा देने के प्रयास के साथ ही अपनी विचारधारा अनुरूप ‘राष्ट्र सर्वोपरि मानकर अनेकानेक ऐतिहासिक निर्णय किये हैं, जो हमारी विचारों की स्पष्टता को प्रतिलिप्त करते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की छठ इच्छाशक्ति से जो सपना हमारे संस्थापकों ने भारत को विश्व गुरु बनाने का देखा था आज उस ओर हम कर्तव्यपर्याप्तता के साथ अग्रसर हैं। हमारी ध्येय यात्रा में केंद्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली पूर्ण बहुमत की सरकार आते ही तीन तलाक कानून, नागरिकता संशोधन कानून, आपराधिक न्यायिक कानूनों में बदलाव के साथ ही पर्डित दीनदयालजी जी के अंत्योदय पर आधारित गरीब- कल्याण की योजनाओं के द्वारा करोड़ों गरीब लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने का काम भी हुआ है। वास्तव में, केंद्र और राज्यों की हमारी सरकारें सुशासन के प्रति समर्पित रहती हैं क्योंकि यही लोकतंत्र की आवश्यकता है। भाजपा समाज के अखिरी छोर पर खड़े व्यक्ति के विकास की बात ही नहीं करती, बल्कि उसे चरितार्थ भी करती है। भाजपा द्वारा जनकल्याण के इस कार्य हेतु अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया गया है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली हमारी केंद्रीकी सरकार ने अंत्योदय के सिद्धांत अनुरूप ही 50 करोड़ से अधिक लोगों के जनन्धन खाते खुलवाए। आयुष्मान, उज्ज्वला और आवास योजनाएं संचालित की गईं। देश खुले में शौच से मुक्त हो गया, घर घर बिजली पहुंचाई। 10 करोड़ से अधिक के गैस कनेक्शन दिए। हर घर शुद्ध पेयजल पहुंचाया।

© 2019 Pearson Education, Inc.

देश-विदेश

यूएन में इस्लामाफोबिया पर आये प्रस्ताव की वास्तविकता

अभा कुछ हो दिन पहले यूएन में 'इस्लामाफोबिया' पर प्रस्ताव लाया गया है। जिसमें पूरी दुनिया से यह कहा गया कि 'इस्लाम से नफरत' करने वालों पर अपने देशों में सख्त कदम उठाएं। कहा जा रहा था कि इस्लाम का आतंकवाद से दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं। इस्लाम तो शाति का मजहब है, वह डॉ. मन्यक चतुर्वेदी तो आपसी प्रेम और भाईचारे में विश्वास खेता है और अब इनका ये प्रेम देखिए कि जिसे ये रमजान का पाक महीना कहते हैं, उसी पवित्र महीने में दुनिया के तमाम देशों में इस्लामिक आतंकवादी घटनाएं घटी हैं। रूस की राजधानी मॉस्को स्थित कॉस्टर्ट हॉल में आतंकी हमले को अंजाम देना हो या मध्यप्रदेश के इंदौर में दो हिन्दू युवाओं को इस लिए घेर कर मार देने के लिए आतुर हो जाना हो, जिसमें कि वे अपने ई-रिक्शा में भगवान श्रीराम जी का भजन सुन रहे थे। ताजा घटनाक्रम महाराष्ट्र में नासिक का है, जहां के जय भवानी इलाके में हजारों मुस्लिमों की भीड़ ने "सर तन से जुदा" के नारे लगाए और सार्वजनिक संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया। मुस्लिमों ने सिटी लिंक बसों और हिंदुओं के निजी वाहनों पर भी हमले किये। भीड़ ने संकेत सौदागर नाम के एक लड़के पर इस्लाम के पैगंबर मुहम्मद की बेटी फतिमा पर अपमानजनक टिप्पणी का आरोप लगाया। जबकि पूरी हकीकत यह है कि नासिक में हिंदू समुदाय आगामी रामनवमी उत्सव (17 अप्रैल) की तैयारी कर रहा है। इस दौरान सौदागर समेत हिंदू समुदाय के लोगों ने ऐलानों में चुनौती में संलग्नता समेत उत्तराधार विषय

—गङ्गी पङ्गवा

गुड़ी पड़वा, जिसे संवत्सर पड़वे
 (गोवा में हिंदू कौणकी लोगों के
 बीच) के नाम से भी जाना जाता है,
 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन
 महाराष्ट्रीयन लोगों द्वारा मनाया जाता
 है। यह चैत्र नवारत्रि का पहला दिन
 है, जिसे घटस्थापना या कलश
 स्थापना के नाम से भी जाना जाता है।
 'पड़वा' नाम संस्कृत शब्द 'प्रतिपदा'
 से आया है, जो चंद्र महीने के पहले
 दिन को संदर्भित करत है। इस दिन,
 एक सुशोभित गुड़ी को फहराया जाता
 है और उसकी पूजा की जाती है,
 जिससे इस आयोजन का नाम पड़ा है।
 यह आयोजन रबी मौसम के अंत में
 होता है। यह हिंदू चंद्र कैलेंडर के
 साथ तीन पवित्र दिनों में से एक है।
 अन्य संवर्धित मुहूर्त दिनों में अक्षय
 तृतीया, विजयादशमी (या दशहरा)
 और बलिप्रतिपदा शामिल हैं।

प्राची

(गावा म हिंदू काकणा लागा क बीच) के नाम से भी जाना जाता है, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन महाराष्ट्रीयन लोगों द्वारा मनाया जाता है। यह चैत्र नवात्रि का पहला दिन है, जिसे घटस्थापना या कलश स्थापना के नाम से भी जाना जाता है। 'पड़वा' नाम संस्कृत शब्द 'प्रतिपदा' से आया है, जो चंद्र महीने के पहले दिन को संबंधित करता है। इस दिन, एक सुशोभित गुड़ी को फहराया जाता है और उसकी पूजा की जाती है, जिससे इस आयोजन का नाम पड़ा है। यह आयोजन रबी मौसम के अंत में होता है। यह हिंदू चंद्र कैलेंडर के साथ तीन पवित्र दिनों में से एक है। अन्य संबंधित मुहूर्त दिनों में अक्षय तृतीया, विजयादशमी (या दशहरा) और बलिप्रतिपदा शामिल हैं।

अनुसार, उगादी, युगादी या सवत्सरदा चत्र
के महीने में चंद्रमा के बढ़ते चरण के पहले
दिन मनाया जाता है। उगादी या युगादी शब्द संस्कृत के मूल शब्दों युग
या 'आयु' और आदि से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'शुरूआत'
जब संयुक्त होते हैं, तो ये शब्द 'एक नए युग की शुरूआत' का संकेत
देते हैं। युगादी नाम विशेष रूप से वर्तमान अवधि या युग की शुरूआत
से संबंधित है, जिसे कलियुग के रूप में जाना जाता है। उगादी आने
वाले वर्ष में जीवन को स्वीकार करने और उसकी सराहना करने का
प्रतिनिधित्व करता है, जो खुशी, दुख, क्रोध, भय, घृणा और आश्वर्य
सहित अच्छे और बुरे अनुभवों का एक विविध संयोजन होगा। नीम
का उपयोग दुःख का दर्शन के लिए किया जाता है क्योंकि इसका
स्वाद कड़वा होता है। गुड़ और पके केले स्वादिष्ट संतोष का
प्रतिनिधित्व करते हैं। हरी मिर्च और काली मिर्च तीखी होती है, जो
क्रोध का संकेत देती है। नमक भय का प्रतीक है, जबकि खट्टा इमली
का रस घृणा का प्रतिनिधित्व करता है। कच्चे आम का उपयोग
अकसर इसके खट्टेपण के लिए किया जाता है, जो आश्वर्य की भावना
जोड़ता है। पूर्व की हर चीज की तरह यह कैलेंडर भी इस बात पर
आधारित है कि यह मानव शरीर क्रिया और अनुभूति को कैसे प्रभावित
करता है। उगादी के पीछे एक विज्ञान है जो कहूँ अलग-अलग
तरीकों से मानव कल्याण को बढ़ाता है।

जाना कुछ हद तक प्रासंगिक है। उगादि चंद्र-सौर कैलेंडर का पालन करता है, जो मानव शरीर की संरचना से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। यह जानना दिलचस्प होगा कि भारतीय ज्योतिष के विद्वानों ने वैदिक युग में ही भविष्यवाणी कर दी थी कि सूर्य ग्रहण एक निश्चित दिन और एक निश्चित समय पर होगा। यह समय गणना युगों बाद भी पूरी तरह सटीक साबित हो रही है। नववर्ष का स्वागत रात्रि के अंधेरे में नहीं किया जाता। नववर्ष का स्वागत सूर्य की पहली किरण का स्वाप्न तभी किया जाता है। अभी तक ऐसे दो में से किरण नहीं

नहीं है। दिन और रात को मिलाकर ही एक दिन पूरा होता है। दिन की शुरूआत सूर्योदय से होती है और अगले सूर्योदय तक जारी रहती है। सूर्योस्त को दिन और रात के बीच का संक्रमण बिंदु माना जाता है। प्रकृति का नववर्ष मार्च में होता है, जब प्रकृति और पृथ्वी एक चक्र पूरा करते हैं। प्रकृति का चक्र जनवरी में समाप्त नहीं होता। नववर्ष तब शुरू होता है, जब पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और दूसरे चक्र के लिए सूर्य की परिक्रमा करती है। नया साल प्रकृति में जीवन की दूर्घटनाएँ भी होती हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

Journal of Health Politics, Policy and Law, Vol. 35, No. 4, December 2010
DOI 10.1215/03616878-35-4 © 2010 by The University of Chicago

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. की ओर से इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेडमा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखण्ड द्वारा मुद्रित, रजिस्ट्रेशन नं. RNI. 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13। प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल', स्थानीय संपादक : राणा अरुण सिंह*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेडमा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलमू-822102, फोन नम्बर : 06562-796018, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-3553943, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लोहरदगा कार्यालय : सरस्वती निवास, तेली धर्मशाला के सामने, कृषि मार्केट, लोहरदगा। - फोन : 7903891779, ई-मेल : news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com (*पीआईआई अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

